Somnath Temple: 1000 Years of India's Unwavering Faith and Devotion

Somnath Temple has long been recognised as a site of profound civilisational and spiritual significance. Widely regarded as one of the earliest centres of Shaivite worship, it finds mention in ancient religious traditions, Puranic literature, and enduring pilgrimage practices. Revered as the first among the twelve Jyotirlinga shrines, Somnath occupies a prominent place in India's sacred geography, attracting devotees from across the country. Its location on the western coast also placed it along historic maritime and trade routes, enabling cultural exchange and integrating the temple into broader networks of faith, learning, and community life.

Historical accounts record that in 1026 CE, Mahmud of Ghazni led an expedition to Somnath, during which the temple complex was attacked and destroyed. Over the centuries, the site witnessed repeated cycles of destruction and reconstruction, supported by successive rulers, patrons, and local communities. Reflecting on this legacy, Swami Vivekananda, during his visit in the 1890s, described temples like Somnath as symbols of India's resilience, embodying a history of regeneration and enduring faith. Despite repeated episodes of damage, worship at the site continued uninterrupted, and over successive centuries, communities and custodians made sustained efforts to restore the temple in various forms, underscoring the enduring symbolic and cultural significance attached to Somnath Temple.

Following Independence, the reconstruction of the temple was undertaken by the Government of India as a national initiative to preserve cultural heritage. Sardar Vallabhbhai Patel played a pivotal role in initiating this effort, working alongside K. M. Munshi and other leaders. The restored temple was inaugurated on 11 May 1951 by the then President of India, Dr. Rajendra Prasad, symbolising a renewed commitment to cultural continuity and national identity.

The Department of Posts is pleased to release a commemorative postage stamp on Somnath Temple to mark 1000 years of resilience and unbroken faith. This issuance honours the profound historical, cultural, and spiritual heritage of the Somnath Temple, which continues to stand as a timeless emblem of resilience, faith, and India's architectural excellence.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms. Nenu Gupta
Text	:	Based on the content provided by the Ministry of Culture

भारतीय डाक
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
Department of Posts

सोमनाथ मंदिरः भारत की अटूट आस्था और भक्ति के 1000 वर्ष
SOMNATH TEMPLE: 1000 YEARS OF INDIA'S UNWAVERING FAITH AND DEVOTION





विवरणिका BROCHURE

सोमनाथ मंदिर: भारत की अटूट आस्था और भक्ति के 1000 वर्ष

सोमनाथ मंदिर, चिरकाल से भारत की समृद्धशाली सभ्यता और गहन आध्यात्मिक विरासत का केंद्र रहा है। शैव दर्शन के आरंभिक केंद्रों में से एक के रूप में जगत प्रसिद्ध, इस मंदिर का उल्लेख प्राचीन धार्मिक ग्रंथों, पौराणिक साहित्य और प्राचीन तीर्थाटन परंपराओं में मिलता है। पवित्र भारत भूमि पर स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम के रूप में पूजित सोमनाथ ज्योतिर्लिंग को धारण करने वाला यह मंदिर देश के सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक है और देशभर से असंख्य श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। भारत के पश्चिमी तट पर प्राचीन समुद्री और व्यापारिक मार्ग में स्थित होने के कारण यह मंदिर, न केवल सांस्कृतिक विनिमय, ज्ञान–विज्ञान और आस्था का केंद्र रहा है, बल्कि आम जन–जीवन का भी अभिन्न हिस्सा रहा है।

ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, सन् 1026 ईस्वी में, गजनी के महमूद ने सोमनाथ पर आक्रमण कर मंदिर को ध्वस्त किया और उसके परिसर को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया। कालांतर में, यह मंदिर ध्वंस और पुनर्निर्माण के कई चक्रों से गुजरा। इसके पुनर्निर्माण में एक के बाद एक कई भारतीय शासकों, संरक्षकों और स्थानीय समुदायों का असीम योगदान रहा। 1890 के दशक में अपनी यात्रा के दौरान, स्वामी विवेकानंद ने सोमनाथ की ऐतिहासिक विरासत पर विचार प्रकट करते हुए, सोमनाथ जैसे मंदिरों को पुनरुत्थान और अटूट श्रद्धा का प्रतीक बताते हुए, इसे भारत की चिरकालिकता का प्रमाण घोषित किया। उल्लेखनीय है कि मंदिर परिसर को बार–बार नष्ट किए जाने के बावजूद, यहां पूजा–अर्चना निर्बाध रूप से जारी रही, और आने वाली हर सदी में, आमजनों तथा संरक्षकों द्वारा इस पवित्र मंदिर को अलग–अलग स्वरूप में अक्षुण्ण रखने के लिए निरंतर प्रयास किए गए। ये प्रयास, सोमनाथ मंदिर के शाश्वत प्रतीकात्मक और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्, देश की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की राष्ट्रीय पहल के तहत भारत सरकार द्वारा सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया। पुनर्निर्माण के इस प्रयास को वास्तविकता के धरातल पर उतारने में सरदार वल्लभभाई पटेल ने के एम मुंशी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस पुनर्निर्मित मंदिर का उद्घाटन 11 मई 1951 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा किया गया और यह भारत के सांस्कृतिक सातत्य तथा राष्ट्रीय पहचान के प्रति देश की अटूट प्रतिबद्धता के प्रतीक के रूप में उभरा।

भारतीय डाक विभाग सोमनाथ मंदिर की दृढ़ता और अटूट आस्था के 1000 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह सोमनाथ मंदिर की गहन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का सम्मान करता है, जो दृढ़ता, आस्था और भारत की वास्तुशिल्प उत्कृष्टता के एक कालातीत प्रतीक के रूप में खड़ा है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य Denomination	: 500पैसे : 500p
मुद्रित डाक टिकटें Stamps Printed	: 202800 : 202800
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट : Wet Offset
मुद्रक Printer	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00